اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ كُلُّ شَیْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ؕ لَهُ الْحُكْمُ وَ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۸۸ ع

सिवा कोई ख़ुदा नहीं हर चीज़ फ़ानी है सिवा उस की ज़ात के उसी का हुक्म है और उसी की त़रफ़ फिर जाओगे[222]

اٰیاتها ٦٩ ۲۹ سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّیَّةٌ ۸۵ رکوعاتها ۷

सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में उन्हत्तर आयतें और सात रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ۝۱ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ یُّتْرَكُوْۤا اَنْ یَّقُوْلُوْۤا اٰمَنَّا وَ هُمْ لَا یُفْتَنُوْنَ ۝۲

क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उन की आज़्माइश न होगी[2]

وَ لَقَدْ فَتَنَّا الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَیَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِیْنَ صَدَقُوْا وَ

और बेशक हम ने उन से अगलों को जांचा[3] तो ज़रूर **अल्लाह** सच्चों को देखेगा और

لَیَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِیْنَ ۝۳ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ اَنْ

ज़रूर झूटों को देखेगा[4] या येह समझे हुए हैं वोह जो बुरे काम करते हैं[5] कि

یَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا یَحْكُمُوْنَ ۝۴ مَنْ كَانَ یَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ

हम से कहीं निकल जाएंगे[6] क्या ही बुरा हुक्म लगाते हैं जिसे **अल्लाह** से मिलने की उम्मीद हो[7] तो बेशक **अल्लाह** की

---

222 : आख़िरत में और वोही आ'माल की जज़ा देगा। **1 :** सूरए अ़न्कबूत मक्किय्या है, इस में सात रुकूअ़, उन्हत्तर आयतें, नव सो अस्सी कलिमे, चार हज़ार एक सो पेंसठ ह़र्फ़ हैं। **2 :** शदाइद, तकालीफ़ और अन्वाअ़ मसाइब और ज़ौक़े त़ाअ़ात व तर्के शहवात व बज़्ले जान व माल से उन की ह़क़ीक़ते ईमान ख़ूब ज़ाहिर हो जाए और मोमिने मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ में इम्तियाज़ ज़ाहिर हो जाए। **शाने नुज़ूल :** येह आयत उन ह़ज़रात के ह़क़ में नाज़िल हुई जो मक्कए मुकर्रमा में थे और उन्हों ने इस्लाम का इक़रार किया तो अस्ह़ाबे रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्हें लिखा कि मह़्ज़ इक़रार काफ़ी नहीं जब तक कि हिजरत न करो। उन साहि़बों ने हिजरत की और ब क़स्दे मदीना रवाना हुए। मुश्रिकीन उन के दरपै हुए और उन से क़िताल किया। बा'ज़ ह़ज़रात उन में से शहीद हो गए बा'ज़ बच आए। उन के ह़क़ में येह दो आयतें नाज़िल हुईं। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मुराद उन लोगों से सलमा बिन हिशाम और अ़याश बिन अबी रबीआ़ और वलीद बिन वलीद और अ़म्मार बिन यासिर वग़ैरा हैं जो मक्कए मुकर्रमा में ईमान लाए। और एक क़ौल येह है कि येह आयत ह़ज़रते अ़म्मार के ह़क़ में नाज़िल हुई जो ख़ुदा परस्ती की वज्ह से सताए जाते थे और कुफ़्फ़ार उन्हें सख़्त ईज़ाएं पहुंचाते थे। और एक क़ौल येह है कि येह आयतें ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग़ुलाम ह़ज़रते मिह्जअ़ बिन अ़ब्दुल्लाह के ह़क़ में नाज़िल हुई जो बद्र में सब से पहले शहीद होने वाले हैं। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने इन की निस्बत फ़रमाया कि मिह्जअ़ सय्यिदुश्शुहदा हैं और इस उम्मत में बाबे जन्नत की त़रफ़ पहले वोह पुकारे जाएंगे। इन के वालिदैन और इन की बीबी को इन का बहुत सदमा हुवा तो **अल्लाह** तआ़ला ने येह आयत नाज़िल की फिर उन की तसल्ली फ़रमाई। **3 :** त़रह़ त़रह़ की आज़्माइशों में डाला, बा'ज़ उन में से वोह हैं जो आरे से चीर डाले गए, बा'ज़ लोहे की कंघियों से पुर्ज़े पुर्ज़े किये गए और मक़ामे सिद्क़ो वफ़ा में साबित व क़ाइम रहे। **4 :** हर एक का ह़ाल ज़ाहिर फ़रमा देगा। **5 :** शिर्क व मआ़सी में मुब्तला हैं **6 :** और हम उन से इन्तिक़ाम न लेंगे। **7 :** बअ़्स व ह़िसाब से डरे या सवाब की उम्मीद रखे।

www.dawateislami.net

اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۞ وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ

मीआद ज़रूर आने वाली है[8] और वोही सुनता जानता है[9] और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे[10] तो अपने ही

لِنَفْسِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

भले को कोशिश करता है[11] बेशक अल्लाह बे परवाह है सारे जहान से[12] और जो ईमान लाए और अच्छे

الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا

काम किये हम ज़रूर उन की बुराइयां उतार देंगे[13] और ज़रूर उन्हें उस काम पर बदला देंगे जो उन के सब

يَعْمَلُوْنَ ۞ وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ وَاِنْ جَاهَدٰكَ

कामों में अच्छा था[14] और हम ने आदमी को ताकीद की अपने मां बाप के साथ भलाई की[15] और अगर वोह तुझ से कोशिश करें

لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَاُنَبِّئُكُمْ

कि तू मेरा शरीक ठहराए जिस का तुझे इल्म नहीं तो उन का कहा न मान[16] मेरी ही त़रफ़ तुम्हारा फिरना है तो मैं बता दूंगा तुम्हें

بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۞ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ

जो तुम करते थे[17] और जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें नेकों

فِي الصّٰلِحِيْنَ ۞ وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ اُوْذِيَ فِي

में शामिल करेंगे[18] और बा'ज़ आदमी कहते हैं हम अल्लाह पर ईमान लाए फिर जब अल्लाह की राह में उन्हें कोई तक्लीफ़ दी

8 : उस ने सवाब व अ़ज़ाब का जो वा'दा फ़रमाया है ज़रूर पूरा होने वाला है, चाहिये कि उस के लिये तय्यार रहे और अ़मले सालेह़ में जल्दी करे। **9 :** बन्दों के अक़्वाल व अफ़्आ़ल को। **10 :** ख़्वाह आ'दाए दीन से मुह़ारबा (जंग) कर के या नफ़्सो शैत़ान की मुख़ालफ़त कर के और त़ाअ़ते इलाही पर साबिर व क़ाइम रह कर **11 :** इस का नफ़्अ़ व सवाब पाएगा। **12 :** इन्स व जिन्न व मलाएका और उन के आ'माल व इ़बादात से, उस का अम्र व नह्य फ़रमाना बन्दों पर रह़मत व करम के लिये है। **13 :** नेकियों के सबब। **14 :** या'नी अ़मले नेक पर। **15 :** एह़सान और नेक सुलूक की। **शाने नुज़ूल :** येह आयत और सूरए लुक़्मान और सूरए अह़क़ाफ़ की आयतें सा'द बिन अबी वक़्क़ास رضی اللہ تعالٰی عنہ के ह़क़ में व बक़ौले इब्ने इस्ह़ाक़ सा'द बिन मालिक ज़ोहरी के ह़क़ में नाज़िल हुईं, इन की मां ह़म्ना बिन्ते अबी सुफ़्यान बिन उमय्या बिन अ़ब्दे शम्स थी। ह़ज़रते सा'द साबिक़ीने अव्वलीन में से थे और अपने वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करते थे। जब आप इस्लाम लाए तो आप की वालिदा ने कहा कि तू ने येह क्या नया काम किया, ख़ुदा की क़सम अगर तू इस से बाज़ न आया तो न मैं खाऊं न पियूं यहां तक कि मर जाऊं और तेरी हमेशा के लिये बदनामी हो और तुझे मां का क़ातिल कहा जाए। फिर उस बुढ़िया ने फ़ाक़ा किया और एक शबाना रोज़ न खाया न पिया न साए में बैठी, इस से ज़ईफ़ हो गई। फिर एक रात दिन और इसी त़रह़ रही तब ह़ज़रते सा'द उस के पास आए और आप ने उस से फ़रमाया कि ऐ मां ! अगर तेरी सो 100 जानें हों और एक एक कर के सब ही निकल जाएं तो भी मैं अपना दीन छोड़ने वाला नहीं, तू चाहे खा चाहे मत खा। जब वोह ह़ज़रते सा'द की त़रफ़ से मायूस हो गई कि येह अपना दीन छोड़ने वाले नहीं तो खाने पीने लगी। इस पर अल्लाह तआ़ला ने येह आयत नाज़िल फ़रमाई और हुक्म दिया कि वालिदैन के साथ नेक सुलूक किया जाए और अगर वोह कुफ़्रो शिर्क का हुक्म दें तो न माना जाए। **16 :** क्यूं कि जिस चीज़ का इ़ल्म न हो उस को किसी के कहे से मान लेना तक़्लीद है। मा'ना येह हुए कि वाक़ेअ़ में मेरा कोई शरीक नहीं तो इ़ल्म व तह़क़ीक़ से तो कोई भी किसी को मेरा शरीक मान ही नहीं सकता, मुह़ाल है। रहा तक़्लीदन बिग़ैर इ़ल्म के मेरे लिये शरीक मान लेना येह निहायत क़बीह़ है, इस में वालिदैन की हरगिज़ इत़ाअ़त न कर। **मस्अला :** ऐसी इत़ाअ़त किसी मख़्लूक़ की जाइज़ नहीं जिस में ख़ुदा की ना फ़रमानी हो। **17 :** तुम्हारे किरदार की जज़ा दे कर **18 :** कि उन के साथ ह़श्र फ़रमाएंगे, और सालिह़ीन से मुराद अम्बिया व औलिया हैं।

اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ

जाती है[19] तो लोगों के फ़ितने को अल्लाह के अ़ज़ाब के बराबर समझते हैं[20] और अगर तुम्हारे रब के पास से मदद आए[21]

لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ

तो ज़रूर कहेंगे हम तो तुम्हारे ही साथ थे[22] क्या अल्लाह ख़ूब नहीं जानता जो कुछ जहां भर के

الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ ﴿۱۱﴾

दिलों में है[23] और ज़रूर अल्लाह ज़ाहिर कर देगा ईमान वालों को[24] और ज़रूर ज़ाहिर कर देगा मुनाफ़िक़ों को[25]

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ

और काफ़िर मुसल्मानों से बोले हमारी राह पर चलो और हम तुम्हारे गुनाह उठा लेंगे[26]

وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۱۲﴾ وَ

हालां कि वोह उन के गुनाहों में से कुछ न उठाएंगे बेशक वोह झूटे हैं और

لَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ ؗ وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا

बेशक ज़रूर अपने[27] बोझ उठाएंगे और अपने बोझों के साथ और बोझ[28] और ज़रूर क़ियामत के दिन पूछे जाएंगे जो

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿۱۳﴾ ع وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ ع ١٣ ١٢

कुछ बोहतान उठाते थे[29] और बेशक हम ने नूह़ को उस की क़ौम की त़रफ़ भेजा तो वोह उन में

اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿۱۴﴾

पचास साल कम हज़ार बरस रहा[30] तो उन्हें तूफ़ान ने आ लिया और वोह ज़ालिम थे[31]

19 : या'नी दीन के सबब से कोई तक्लीफ़ पहुंचती है जैसे कि कुफ़्फ़ार का ईज़ा पहुंचाना **20 :** और जैसा अल्लाह के अ़ज़ाब से डरना चाहिये था ऐसा ख़ल्क़ की ईज़ा से डरते हैं, ह़त्ता कि ईमान तर्क कर देते हैं और कुफ़्र इख़्तियार कर लेते हैं, येह ह़ाल मुनाफ़िक़ीन का है। **21 :** मसलन मुसल्मानों की फ़त्ह़ हो या उन्हें दौलत मिले **22 :** ईमान व इस्लाम में और तुम्हारी त़रह़ दीन पर साबित थे तो हमें उस में शरीक करो। **23 :** कुफ़्र या ईमान। **24 :** जो सिद्क़ो इख़्लास के साथ ईमान लाए और बला व मुसीबत में अपने ईमान व इस्लाम पर साबित व क़ाइम रहे। **25 :** और दोनों फ़रीक़ों को जज़ा देगा। **26 :** कुफ़्फ़ारे मक्का ने मोमिनीने क़ुरैश से कहा था कि तुम हमारा और हमारे बाप दादा का दीन इख़्तियार करो तुम्हें अल्लाह की त़रफ़ से जो मुसीबत पहुंचेगी उस के हम कफ़ील हैं और तुम्हारे गुनाह हमारी गरदन पर। या'नी अगर हमारे त़रीक़े पर रहने से अल्लाह तआ़ला ने तुम को पकड़ा और अ़ज़ाब किया तो तुम्हारा अ़ज़ाब हम अपने ऊपर ले लेंगे। अल्लाह तआ़ला ने उन की तक्ज़ीब फ़रमाई। **27 :** कुफ़्र व मआ़सी के **28 :** उन के गुनाहों के जिन्हें इन्हों ने गुमराह किया और राहे ह़क़ से रोका। ह़दीस शरीफ़ में है : जिस ने इस्लाम में कोई बुरा त़रीक़ा निकाला उस पर उस त़रीक़ा निकालने का गुनाह भी है और क़ियामत तक जो लोग उस पर अ़मल करें उन के गुनाह भी, बिग़ैर इस के कि उन पर से उन के बारे गुनाह में कुछ भी कमी हो। (مسلم شریف) **29 :** अल्लाह तआ़ला उन के आ'माल व इफ़्तिरा (बोहतान) सब का जानने वाला है लेकिन येह सुवाल तौबीख़ के लिये है। **30 :** इस तमाम मुद्दत में क़ौम को तौह़ीद व ईमान की दा'वत जारी रखी और उन की ईज़ाओं पर सब्र किया, इस पर भी वोह क़ौम बाज़ न आई और तक्ज़ीब करती रही। **31 :** तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए। इस में नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَسَلَّم को तसल्ली दी गई है कि आप से पहले अम्बिया के साथ उन की क़ौमों ने बहुत सख़्तियां की हैं ह़ज़रते नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام

www.dawateislami.net

فَاَنْجَیْنٰهُ وَ اَصْحٰبَ السَّفِیْنَةِ وَ جَعَلْنٰهَاۤ اٰیَةً لِّلْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۵﴾ وَ اِبْرٰهِیْمَ

तो हम ने उसे[32] और कश्ती वालों को[33] बचा लिया और उस कश्ती को सारे जहां के लिये निशानी किया[34] और इब्राहीम को[35]

اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ اتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ

जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया कि अल्लाह को पूजो और उस से डरो इस में तुम्हारा भला है अगर तुम

تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۶﴾ اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا وَّ تَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ

जानते तुम तो अल्लाह के सिवा बुतों को पूजते हो और निरा झूट गढ़ते हो[36]

اِنَّ الَّذِیْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا یَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا

बेशक वोह जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पूजते हो तुम्हारी रोज़ी के कुछ मालिक नहीं तो अल्लाह

عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَ اعْبُدُوْهُ وَ اشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ﴿۱۷﴾ وَ اِنْ

के पास रिज़्क़ ढूंडो[37] और उस की बन्दगी करो और उस का एह्सान मानो तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है[38] और अगर

تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ

तुम झुटलाओ[39] तो तुम से पहले कितने ही गुरौह झुटला चुके हैं[40] और रसूल के ज़िम्मे नहीं मगर साफ़

الْمُبِیْنُ ﴿۱۸﴾ اَوَ لَمْ یَرَوْا كَیْفَ یُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ یُعِیْدُهٗ ؕ اِنَّ

पहुंचा देना और क्या उन्हों ने न देखा अल्लाह क्यूंकर ख़ल्क़ की इब्तिदा फ़रमाता है[41] फिर उसे दोबारा बनाएगा[42] बेशक

ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ یَسِیْرٌ ﴿۱۹﴾ قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَیْفَ بَدَاَ

येह अल्लाह को आसान है[43] तुम फ़रमाओ ज़मीन में सफ़र कर के देखो[44] अल्लाह क्यूंकर पहले

الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ یُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ

बनाता है[45] फिर अल्लाह दूसरी उठान उठाता है[46] बेशक अल्लाह सब कुछ

पचास कम हज़ार (950) बरस दा'वत फ़रमाते रहे और इस त़वील मुद्दत में उन की क़ौम के बहुत क़लील लोग ईमान लाए, तो आप कुछ ग़म न करें क्यूं कि بِفَضْلِهٖ تَعَالٰی आप की क़लील मुद्दत की दा'वत से ख़ल्क़े कसीर मुशर्रफ़ ब ईमान हो चुकी है। **32 :** या'नी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام को **33 :** जो आप के साथ थे, उन की ता'दाद अठत्तर थी, निस्फ़ मर्द निस्फ़ औ़रतें। उन में ह़ज़रते नूह़ عَلَیْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द साम व ह़ाम व याफ़िस और उन की बीबियां भी शामिल हैं **34 :** कहा गया है कि वोह कश्ती "जूदी" पहाड़ पर मुद्दते दराज़ तक बाक़ी रही। **35 :** याद करो ! **36 :** कि बुतों को ख़ुदा का शरीक कहते हो। **37 :** वोही राज़िक़ है। **38 :** आख़िरत में। **39 :** और मुझे न मानो तो इस से मेरा कोई ज़रर नहीं। मैं ने राह दिखा दी, मो'जिज़ात पेश कर दिये, मेरा फ़र्ज़ अदा हो गया। इस पर भी अगर तुम न मानो **40 :** अपने अम्बिया को। जैसे कि क़ौमे नूह़ व आ़द व समूद वग़ैरा। उन के झुटलाने का अन्जाम येही हुवा कि अल्लाह तआ़ला ने हलाक किया। **41 :** कि पहले उन्हें नुत़्फ़ा बनाता है, फिर ख़ून बस्ता की सूरत देता है, फिर गोश्त पारा बनाता है, इस त़रह़ तदरीजन उन की ख़िल्क़त को मुकम्मल करता है। **42 :** आख़िरत में बअ़्स के वक़्त। **43 :** या'नी पहली बार पैदा करना और मरने के बा'द फिर दोबारा बनाना। **44 :** गुज़श्ता क़ौमों के दियार व आसार को कि

www.dawateislami.net

قَدِيْرٌ ﴿٢٠﴾ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ﴿٢١﴾

कर सकता है अज़ाब देता है जिसे चाहे[47] और रह़म फ़रमाता है जिस पर चाहे[48] और तुम्हें उसी की त़रफ़ फिरना है

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۫ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ

और न तुम ज़मीन में[49] क़ाबू से निकल सको और न आस्मान में[50] और तुम्हारे लिये **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿٢٢﴾ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ ع ٢

न कोई काम बनाने वाला और न मददगार और वोह जिन्हों ने मेरी आयतों और मेरे मिलने को न माना[51]

اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٢٣﴾ فَمَا كَانَ

वोह हैं जिन्हें मेरी रह़मत की आस नहीं और उन के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है[52] तो उस की

جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ

क़ौम को कुछ जवाब बन न आया मगर येह बोले उन्हें क़त्ल कर दो या जला दो[53] तो **अल्लाह** ने उसे[54] आग से बचा लिया[55]

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٢٤﴾ وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ

बेशक इस में ज़रूर निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[56] और इब्राहीम ने[57] फ़रमाया तुम ने तो **अल्लाह** के सिवा

اللّٰهِ اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ

येह बुत बना लिये हैं जिन से तुम्हारी दोस्ती येही दुन्या की ज़िन्दगी तक है[58] फिर क़ियामत के दिन तुम में

بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ

एक दूसरे के साथ कुफ़्र करेगा और एक दूसरे पर ला'नत डालेगा[59] और तुम सब का ठिकाना जहन्नम है[60] और तुम्हारा

45 : मख़्लूक़ को फिर उसे मौत देता है **46 :** या'नी जब येह यक़ीन से जान लिया कि पहली मरतबा **अल्लाह** ही ने पैदा किया तो मा'लूम हो गया कि उस ख़ालिक़ का मख़्लूक़ को मौत देने के बा'द दोबारा पैदा करना कुछ भी मुतअ़ज़्ज़िर (मुश्किल) नहीं। **47 :** अपने अ़द्ल से **48 :** अपने फ़ज़्ल से **49 :** अपने रब के **50 :** उस से बचने और भागने की कहीं मजाल नहीं। या येह मा'ना हैं कि न ज़मीन वाले उस के हुक्म व क़ज़ा से कहीं भाग सकते हैं न आस्मान वाले। **51 :** या'नी कुरआन शरीफ़ और बअ़्स पर ईमान न लाए। **52 :** इस पन्दो मौइज़त के बा'द फिर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाया जाता है कि जब आप ने अपनी क़ौम को ईमान की दा'वत दी और दलाइल क़ाइम किये और नसीहतें फ़रमाईं **53 :** येह उन्हों ने आपस में एक दूसरे से कहा या सरदारों ने अपने मुत्तबिईन से। बहर हाल कुछ कहने वाले थे, कुछ इस पर राज़ी होने वाले, थे सब मुत्तफ़िक़। इस लिये वोह सब क़ाइलीन के हुक्म में हैं। **54 :** या'नी ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को जब कि उन की क़ौम ने आग में डाला। **55 :** उस आग को ठन्डा कर के और ह़ज़रते इब्राहीम के लिये सलामती बना कर। **56 :** अ़जीब अ़जीब निशानियां, आग का इस कसरत के बा वुजूद असर न करना और सर्द हो जाना और उस की जगह गुलशन पैदा हो जाना और येह सब पल भर से भी कम में होना। **57 :** अपनी क़ौम से **58 :** फिर मुन्क़त़अ़ हो जाएगी और आख़िरत में कुछ काम न आएगी। **59 :** बुत अपने पुजारियों से बेज़ार होंगे और सरदार अपने मानने वालों से और मानने वाले सरदारों पर ला'नत करेंगे। **60 :** बुतों का भी और पुजारियों का भी, उन में के सरदारों का भी और उन के फ़रमां बरदारों का भी।

www.dawateislami.net

وقف لازم

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۲۵﴾ فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ

कोई मददगार नहीं[61] तो लूत़ उस पर ईमान लाया[62] और इब्राहीम ने कहा मैं[63] अपने रब की त़रफ़ हिजरत करता हूं[64] बेशक

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿۲۶﴾ وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا فِيْ

वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है और हम ने उसे[65] इस्ह़ाक़ और या'क़ूब अ़त़ा फ़रमाए और हम ने उस की

ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ

औलाद में नुबुव्वत[66] और किताब रखी[67] और हम ने दुन्या में उस का सवाब उसे अ़त़ा फ़रमाया[68] और बेशक आख़िरत में वोह

لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۲۷﴾ وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ ۫

हमारे क़ुर्बे ख़ास के सज़ावारों में है[69] और लूत़ को नजात दी जब उस ने अपनी क़ौम से फ़रमाया तुम बेशक बे ह़याई का काम करते हो

مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۲۸﴾ اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَ

कि तुम से पहले दुन्या भर में किसी ने न किया[70] क्या तुम मर्दों से बद फ़े'ली करते हो और

تَقْطَعُوْنَ السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ فَمَا كَانَ جَوَابَ

राह मारते हो[71] और अपनी मजलिस में बुरी बात करते हो[72] तो उस की क़ौम का कुछ

قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۲۹﴾

जवाब न हुवा मगर येह कि बोले हम पर **अल्लाह** का अ़ज़ाब लाओ अगर तुम सच्चे हो[73]

61 : जो तुम्हें अ़ज़ाब से बचाए। और जब ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْمَات आग से सलामत निकले और उस ने आप को कोई ज़रर न पहुंचाया **62 :** या'नी ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह मो'जिज़ा देख कर ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की रिसालत की तस्दीक़ की। आप ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के सब से पहले तस्दीक़ करने वाले हैं। ईमान से तस्दीक़े रिसालत ही मुराद है क्यूं कि अस्ल तौह़ीद का ए'तिक़ाद तो उन को हमेशा से ह़ासिल है, इस लिये कि अम्बिया हमेशा ही मोमिन होते हैं और कुफ़्र उन से किसी ह़ाल में मुतसव्वर नहीं। **63 :** अपनी क़ौम को छोड़ कर **64 :** जहां उस का हुक्म हो। चुनान्चे, आप ने सवादे इ़राक़ से सर ज़मीने शाम की त़रफ़ हिजरत फ़रमाई, इस हिजरत में आप के साथ आप की बीबी सारह और ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام थे। **65 :** बा'द ह़ज़रते इस्माई़ल عَلَيْهِ السَّلَام के **66 :** कि ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द जितने अम्बिया हुए सब आप की नस्ल से हुए। **67 :** किताब से तौरैत, इन्जील, ज़बूर, क़ुरआन शरीफ़ मुराद हैं। **68 :** कि पाक ज़ुर्रिय्यत अ़त़ा फ़रमाई, पैग़म्बरी उन की नस्ल में रखी, किताबें उन पैग़म्बरों को अ़त़ा कीं जो उन की औलाद में हैं और उन को ख़ल्क़ में मह़बूब व मक़्बूल किया कि तमाम अहले मिलल व अद्यान उन से मह़ब्बत रखते हैं और उन की त़रफ़ निस्बते फ़ख़्र जानते हैं और उन के लिये इख़्तितामे दुन्या तक दुरूद मुक़र्रर कर दिया। येह तो वोह है जो दुन्या में अ़त़ा फ़रमाया **69 :** जिन के लिये बड़े बुलन्द दरजे हैं। **70 :** इस बे ह़याई की तफ़्सीर इस से अगली आयत में बयान होती है। **71 :** राहगीरों को क़त्ल कर के उन के माल लूट कर। और येह भी कहा गया है कि वोह लोग मुसाफ़िरों के साथ बद फ़े'ली करते थे ह़त्ता कि लोगों ने उस त़रफ़ गुज़रना मौक़ूफ़ कर दिया था। **72 :** जो अ़क़्लन व उ़र्फ़न क़बीह़ व मम्नूअ़ है जैसे गाली देना, फ़ोह़्श बकना, ताली और सीटी बजाना एक दूसरे के कंकरियां मारना, रस्ता चलने वालों पर कंकरी वग़ैरा फेंकना, शराब पीना, तमस्ख़ुर और गन्दी बातें करना एक दूसरे पर थूकना वग़ैरा ज़लील अफ़्आ़ल व ह़रकात जिन की क़ौमे लूत़ आ़दी थी। ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام ने इस पर उन्हें मलामत की **73 :** इस बात में कि येह अफ़्आ़ल क़बीह़ हैं और ऐसा करने वाले पर अ़ज़ाब नाज़िल होगा। येह उन्हों ने बराहे इस्तिहज़ा (बत़ौरे मज़ाक़) कहा। जब ह़ज़रते लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को उस क़ौम के राहे रास्त पर आने की कुछ उम्मीद न रही तो आप ने बारगाहे इलाही में।

www.dawateislami.net

ع ٨/٣ ١٥

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِیْ عَلَی الْقَوْمِ الْمُفْسِدِیْنَ ﴿۳۰﴾ ع وَ لَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَاۤ

अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरी मदद कर[74] इन फ़सादी लोगों पर[75] और जब हमारे फ़िरिश्ते

اِبْرٰهِیْمَ بِالْبُشْرٰی ۙ قَالُوْۤا اِنَّا مُهْلِكُوْۤا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْیَةِ ۚ اِنَّ اَهْلَهَا

इब्राहीम के पास मुज़्दा ले कर आए[76] बोले हम ज़रूर उस शहर वालों को हलाक करेंगे[77] बेशक उस के बसने वाले

كَانُوْا ظٰلِمِیْنَ ﴿۳۱﴾ قَالَ اِنَّ فِیْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ فِیْهَا ۫ وقفة

सितम गार हैं कहा[78] उस में तो लूत़ है[79] फ़िरिश्ते बोले हमें ख़ूब मा'लूम है जो कुछ उस में है

لَنُنَجِّیَنَّهٗ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِیْنَ ﴿۳۲﴾ وَ لَمَّاۤ اَنْ

ज़रूर हम उसे[80] और उस के घर वालों को नजात देंगे मगर उस की औ़रत को वोह रह जाने वालों में है[81] और जब हमारे

جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِیْٓءَ بِهِمْ وَ ضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّ قَالُوْا لَا تَخَفْ

फ़िरिश्ते लूत़ के पास[82] आए उन का आना उसे ना गवार हुवा और उन के सबब दिलतंग हुवा[83] और उन्हों ने कहा न डरिये[84]

وَ لَا تَحْزَنْ ۫ قف اِنَّا مُنَجُّوْكَ وَ اَهْلَكَ اِلَّا امْرَاَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِیْنَ ﴿۳۳﴾

और न ग़म कीजिये[85] बेशक हम आप को और आप के घर वालों को नजात देंगे मगर आप की औ़रत वोह रह जाने वालों में है

اِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰۤی اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْیَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا

बेशक हम इस शहर वालों पर आस्मान से अ़ज़ाब उतारने वाले हैं बदला इन की

یَفْسُقُوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ لَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَاۤ اٰیَةًۢ بَیِّنَةً لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۳۵﴾ وَ اِلٰی

ना फ़रमानियों का और बेशक हम ने इस से रोशन निशानी बाक़ी रखी अ़क़्ल वालों के लिये[86] मद्यन

مَدْیَنَ اَخَاهُمْ شُعَیْبًا ۙ فَقَالَ یٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَ ارْجُوا الْیَوْمَ

की त़रफ़ उन के हमक़ौम शुऐ़ब को भेजा तो उस ने फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की बन्दगी करो और पिछले दिन की

74 : नुज़ूले अ़ज़ाब के बारे में मेरी बात पूरी कर के 75 : अल्लाह तआ़ला ने आप की दुआ़ क़बूल फ़रमाई। 76 : उन के बेटे और पोते ह़ज़रते इस्ह़ाक़ व ह़ज़रते या'क़ूब عَلَيْهِمَا السَّلَام का। 77 : उस शहर का नाम सदूम था। 78 : ह़ज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने 79 : और लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام तो अल्लाह के नबी और उस के बरगुज़ीदा बन्दे हैं। 80 : या'नी लूत़ عَلَيْهِ السَّلَام को 81 : अ़ज़ाब में। 82 : ख़ूब सूरत मेहमानों की शक्ल में 83 : क़ौम के अफ़्आ़ल व ह़रकात और उन की ना लाइक़ी का ख़याल कर के। उस वक़्त फ़िरिश्तों ने ज़ाहिर किया कि वोह अल्लाह के भेजे हुए हैं। 84 : क़ौम से 85 : हमारा कि क़ौम के लोग हमारे साथ कोई बे अदबी या गुस्ताख़ी करें, हम फ़िरिश्ते हैं, हम लोगों को हलाक करेंगे और 86 : ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि वोह रोशन निशानी क़ौमे लूत़ के वीरान मकान हैं।

www.dawateislami.net

الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِی الْاَرْضِ مُفْسِدِیْنَ ﴿۳۶﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَتْهُمُ

उम्मीद रखो[87] और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फिरो तो उन्हों ने उसे झुटलाया तो उन्हें ज़ल्ज़ले

الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۳۷﴾ وَعَادًا وَّ ثَمُوْدَاۡ وَقَدْ تَّبَیَّنَ

ने आ लिया तो सुब्ह अपने घरों में घुटनों के बल पड़े रह गए[88] और आ़द और समूद को हलाक फ़रमाया और तुम्हें[89]

لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ ۫ وَزَیَّنَ لَهُمُ الشَّیْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ

उन की बस्तियां मा'लूम हो चुकी हैं[90] और शैतान ने उन के कौतक (करतूत)[91] उन की निगाह में भले कर दिखाए और उन्हें राह

السَّبِیْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِیْنَ ﴿۳۸﴾ وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ ۫ وَ

से रोका और उन्हें सूझता था[92] और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को[93] और

لَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰی بِالْبَیِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِی الْاَرْضِ وَمَا كَانُوْا

बेशक उन के पास मूसा रोशन निशानियां ले कर आया तो उन्हों ने ज़मीन में तकब्बुर किया और वोह हम से

سٰبِقِیْنَ ﴿۳۹﴾ فَكُلًّا اَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ اَرْسَلْنَا عَلَیْهِ حَاصِبًا ۚ

निकल जाने वाले न थे[94] तो उन में हर एक को हम ने उस के गुनाह पर पकड़ा तो उन में किसी पर हम ने पथराव भेजा[95]

وَمِنْهُمْ مَّنْ اَخَذَتْهُ الصَّیْحَةُ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْاَرْضَ ۚ وَ

और उन में किसी को चिंघाड़ ने आ लिया[96] और उन में किसी को ज़मीन में धंसा दिया[97] और

مِنْهُمْ مَّنْ اَغْرَقْنَا ۚ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِیَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ

उन में किसी को डुबो दिया[98] और अल्लाह की शान न थी कि उन पर ज़ुल्म करे[99] हां वोह ख़ुद ही[100] अपनी जानों पर

یَظْلِمُوْنَ ﴿۴۰﴾ مَثَلُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِیَآءَ كَمَثَلِ

ज़ुल्म करते थे उन की मिसाल जिन्हों ने अल्लाह के सिवा और मालिक बना लिये हैं[101]

87 : या'नी रोज़े क़ियामत की, ऐसे अफ़्आ़ल बजा ला कर जो सवाबे आख़िरत का बाइस हों। **88 :** मुर्दे बेजान। **89 :** ऐ अहले मक्का ! **90 :** हिज्र और यमन में, जब तुम अपने सफ़रों में वहां गुज़रे हो। **91 :** कुफ़्रो मआ़सी **92 :** साहिबे अ़क़्ल थे, हक़ व बातिल में तमीज़ कर सकते थे लेकिन उन्हों ने अ़क़्ल व इन्साफ़ से काम न लिया। **93 :** अल्लाह तआ़ला ने हलाक फ़रमाया। **94 :** कि हमारे अ़ज़ाब से बच सकते। **95 :** और वोह क़ौमे लूत़ थी जिन को छोटे छोटे संगरेज़ों से हलाक किया गया जो तेज़ हवा से उन पर लगते थे। **96 :** या'नी क़ौमे समूद कि होलनाक आवाज़ के अ़ज़ाब से हलाक की गई। **97 :** या'नी क़ारून और उस के साथियों को **98 :** जैसे क़ौमे नूह़ को और फ़िरऔन को और उस की क़ौम को। **99 :** वोह किसी को बिग़ैर गुनाह के अ़ज़ाब में गिरिफ़्तार नहीं करता। **100 :** ना फ़रमानियां कर के और कुफ़्र व तुग़यान (सरकशी) इख़्तियार कर के **101 :** या'नी बुतों को मा'बूद ठहराया है, उन के साथ उम्मीदें वाबस्ता कर रखी हैं और वाक़ेअ़ में उन के इज्ज़ व बे इख़्तियारी की मिसाल येह है जो आगे ज़िक्र फ़रमाई जाती है।

www.dawateislami.net

الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ بَیْتًا ؕ وَ اِنَّ اَوْهَنَ الْبُیُوْتِ لَبَیْتُ

मकड़ी की त़रह़ है उस ने जाले का घर बनाया[102] और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी

الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا یَعْلَمُوْنَ ﴿۴۱﴾ اِنَّ اللّٰهَ یَعْلَمُ مَا یَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ

का घर[103] क्या अच्छा होता अगर जानते[104] अल्लाह जानता है जिस चीज़ की उस के सिवा पूजा

مِنْ شَیْءٍ ؕ وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۴۲﴾ وَ تِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ

करते हैं[105] और वोही इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाला है[106] और येह मिसालें हम लोगों के लिये बयान फ़रमाते हैं

وَ مَا یَعْقِلُهَاۤ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿۴۳﴾ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ

और उन्हें नहीं समझते मगर इ़ल्म वाले[107] अल्लाह ने आस्मान और ज़मीन ह़क़ बनाए

اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ﴿۴۴﴾ ع

बेशक इस में निशानी है[108] मुसल्मानों के लिये

102 : अपने रहने के लिये। न उस से गरमी दूर हो न सरदी, न गर्दो गु़बार व बारिश किसी चीज़ से ह़िफ़ाज़त। ऐसे ही बुत हैं कि अपने पुजारियों को न दुन्या में नफ़्अ़ पहुंचा सकें न आख़िरत में कोई ज़रर पहुंचा सकें। **103 :** ऐसे ही सब दीनों में कमज़ोर और निकम्मा दीन बुत परस्तों का दीन है। **फ़ाएदा :** ह़ज़रत अ़लिय्ये मुर्तज़ा رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है आप ने फ़रमाया : अपने घरों से मकड़ियों के जाले दूर करो येह नादारी का बाइ़स होते हैं। **104 :** कि उन का दीन इस क़दर निकम्मा है। **105 :** कि वोह कुछ ह़क़ीक़त नहीं रखती। **106 :** तो आ़क़िल को कब शायान है कि इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले क़ादिर मुख़्तार की इ़बादत छोड़ कर बे इ़ल्म बे इख़्तियार पथ्थरों की पूजा करे। **107 :** या'नी उन के हुस्नो ख़ूबी और उन के नफ़्अ़ और फ़ाएदे और उन की ह़िक्मत को इ़ल्म वाले समझते हैं, जैसा कि इस मिसाल ने मुश्रिक और मुवह़्ह़िद का ह़ाल ख़ूब अच्छी त़रह़ ज़ाहिर कर दिया और फ़र्क़ वाज़ेह़ फ़रमा दिया। कु़रैश के कुफ़्फ़ार ने त़न्ज़ के त़ौर पर कहा था कि अल्लाह तआ़ला मख्खी और मकड़ी की मिसालें बयान फ़रमाता है और इस पर उन्हों ने हंसी बनाई थी। इस आयत में उन का रद कर दिया गया कि वोह जाहिल हैं, तम्सील की ह़िक्मत को नहीं जानते, मिसाल से मक़्सूद तफ़्हीम होती है और जैसी चीज़ हो उस की शान ज़ाहिर करने के लिये वैसी ही मिसाल मुक़्तज़ाए ह़िक्मत है। तो बात़िल और कमज़ोर दीन के ज़ो'फ़ व बुत़लान के इज़्हार के लिये येह मिसाल निहायत ही नाफ़ेअ़ है, जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अ़क़्ल व इ़ल्म अ़त़ा फ़रमाया वोह समझते हैं। **108 :** उस की क़ुदरत व ह़िक्मत और उस की तौह़ीद व यक्ताई पर दलालत करने वाली।

اُتْلُ مَاۤ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ اَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰی

ऐ महबूब पढ़ो जो किताब तुम्हारी त़रफ़ वह्‌य की गई[109] और नमाज़ क़ाइम फ़रमाओ बेशक नमाज़ मन्अ़ करती है

عَنِ الْفَحْشَآءِ وَ الْمُنْكَرِ ؕ وَ لَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ وَ اللّٰهُ یَعْلَمُ مَا

बे हयाई और बुरी बात से[110] और बेशक **अल्लाह** का ज़िक्र सब से बड़ा[111] और **अल्लाह** जानता है जो

تَصْنَعُوْنَ ﴿۴۵﴾ وَ لَا تُجَادِلُوْۤا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۗۖ اِلَّا

तुम करते हो और ऐ मुसल्मानो ! किताबियों से न झगड़ो मगर बेहतर त़रीक़े पर[112] मगर

الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَ قُوْلُوْۤا اٰمَنَّا بِالَّذِیْۤ اُنْزِلَ اِلَیْنَا وَ اُنْزِلَ

वोह जिन्हों ने उन में से ज़ुल्म किया[113] और कहो[114] हम ईमान लाए उस पर जो हमारी त़रफ़ उतरा और जो तुम्हारी

اِلَیْكُمْ وَ اِلٰهُنَا وَ اِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿۴۶﴾ وَ كَذٰلِكَ اَنْزَلْنَاۤ

त़रफ़ उतरा और हमारा तुम्हारा एक मा'बूद है और हम उस के हुज़ूर गरदन रखे हैं[115] और ऐ महबूब यूंही तुम्हारी

109 : या'नी क़ुरआन शरीफ़ कि इस की तिलावत इ़बादत भी है और इस में लोगों के लिये पन्दो नसीह़त भी और अह़काम व आदाब व मकारिमे अख़्लाक़ की ता'लीम भी। **110 :** या'नी मम्नूआ़ते शरइय्या से। लिहाज़ा जो शख़्स नमाज़ का पाबन्द होता है और इस को अच्छी त़रह अदा करता है नतीजा येह होता है कि एक न एक दिन वोह उन बुराइयों को तर्क कर देता है जिन में मुब्तला था। ह़ज़रते अनस رضی اللہ تعالٰی عنہ से मरवी है कि एक अन्सारी जवान सय्यिदे आ़लम صلی اللہ علیہ وسلم के साथ नमाज़ पढ़ा करता था और बहुत से कबीरा गुनाहों का इरतिकाब करता था, हुज़ूर से उस की शिकायत की गई। फ़रमाया : उस की नमाज़ किसी रोज़ उस को इन बातों से रोक देगी। चुनान्चे बहुत ही क़रीब ज़माने में उस ने तौबा की और उस का ह़ाल बेहतर हो गया। ह़ज़रते ह़सन رضی اللہ تعالٰی عنہ ने फ़रमाया कि जिस की नमाज़ उस को बे हयाई और मम्नूआ़त से न रोके वोह नमाज़ ही नहीं। **111 :** कि वोह अफ़्ज़ले त़ाआ़त है। तिरमिज़ी की ह़दीस में है : सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ने फ़रमाया : क्या मैं तुम्हें न बताऊं वोह अ़मल जो तुम्हारे आ'माल में बेहतर और रब के नज़्दीक पाकीज़ा तर निहायत बुलन्द रुत्बा और तुम्हारे लिये सोने चांदी देने से बेहतर और जिहाद में लड़ने और मारे जाने से बेहतर है ? सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : बेशक या रसूलल्लाह ! फ़रमाया : वोह **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र है। तिरमिज़ी ही की दूसरी ह़दीस में है कि सह़ाबा ने हुज़ूर से दरयाफ़्त किया था कि रोज़े क़ियामत **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक किन बन्दों का दरजा अफ़्ज़ल है ? फ़रमाया : ब कसरत ज़िक्र करने वालों का। सह़ाबा ने अ़र्ज़ किया : और ख़ुदा की राह में जिहाद करने वाला ? फ़रमाया : अगर वोह अपनी तलवार से कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन को यहां तक मारे कि तलवार टूट जाए और वोह ख़ून में रंग जाए जब भी ज़ाकिरीन ही का दरजा उस से बुलन्द है। ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما ने इस आयत की तफ़्सीर येह फ़रमाई है कि **अल्लाह** तआ़ला का अपने बन्दों को याद करना बहुत बड़ा है। और एक क़ौल इस की तफ़्सीर में येह है कि **अल्लाह** तआ़ला का ज़िक्र बड़ा है, बे हयाई और बुरी बातों से रोकने और मन्अ़ करने में। **112 : अल्लाह** तआ़ला की त़रफ़ उस की आयात से दा'वत दे कर और हुज्जतों पर आगाह कर के। **113 :** ज़ियादती में ह़द से गुज़र गए, इनाद इख़्तियार किया, नसीह़त न मानी नरमी से नफ़्अ़ न उठाया, उन के साथ ग़िल्ज़त (शिद्दत) और सख़्ती इख़्तियार करो। और एक क़ौल येह है कि मा'ना येह हैं कि जिन लोगों ने सय्यिदे आ़लम صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم को ईज़ा दी या जिन्हों ने **अल्लाह** तआ़ला के लिये बेटा और शरीक बताया उन के साथ सख़्ती करो। या येह मा'ना हैं कि ज़िम्मी जिज़्या अदा करने वालों के साथ अह़्सन त़रीक़े पर मुजादला करो, मगर जिन्हों ने ज़ुल्म किया और ज़िम्मा से निकल गए और जिज़्ये को मन्अ़ किया उन से मुजादला तलवार के साथ है। **मस्अला :** इस आयत से कुफ़्फ़ार के साथ दीनी उमूर में मुनाज़रा करने का जवाज़ साबित होता है और ऐसे ही इल्मे कलाम सीखने का जवाज़ भी। **114 :** अहले किताब से जब वोह तुम से अपनी किताबों का कोई मज़्मून बयान करें **115 :** ह़दीस शरीफ़ में है : जब अहले किताब तुम से कोई मज़्मून बयान करें तो तुम न उन की तस्दीक़ करो न तक्ज़ीब करो, येह कह दो कि हम **अल्लाह** तआ़ला पर और उस की किताबों पर और उस के रसूलों पर ईमान लाए, तो अगर वोह मज़्मून उन्हों ने ग़लत़ बयान किया है तो उस की तस्दीक़ के गुनाह से तुम बचे रहोगे और अगर मज़्मून सह़ीह़ था तो तुम उस की तक्ज़ीब से मह़फ़ूज़ रहोगे।

www.dawateislami.net

اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ

तृरफ़ किताब उतारी[116] तो वोह जिन्हें हम ने किताब अ़ता फ़रमाई[117] उस पर ईमान लाते हैं और कुछ उन में से हैं[118]

مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۴۷﴾ وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا

जो उस पर ईमान लाते हैं और हमारी आयतों से मुन्किर नहीं होते मगर काफ़िर[119] और इस[120] से पहले

مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۴۸﴾

तुम कोई किताब न पढ़ते थे और न अपने हाथ से कुछ लिखते थे यूं होता[121] तो बातिल वाले ज़रूर शक लाते[122]

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ

बल्कि वोह रोशन आयतें हैं उन के सीनों में जिन को इल्म दिया गया[123] और हमारी आयतों का

بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا الظّٰلِمُوْنَ ﴿۴۹﴾ وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ

इन्कार नहीं करते मगर ज़ालिम[124] और बोले[125] क्यूं न उतरीं कुछ निशानियां इन पर इन के रब की तृरफ़ से[126] तुम फ़रमाओ

اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿۵۰﴾ اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ

निशानियां तो **अल्लाह** ही के पास हैं[127] और मैं तो येही साफ़ डर सुनाने वाला हूं[128] और क्या येह उन्हें बस नहीं

اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى

कि हम ने तुम पर किताब उतारी जो उन पर पढ़ी जाती है[129] बेशक इस में रह़मत और नसीहत है

116 : कुरआने पाक जैसे उन की तृरफ़ तौरैत वगै़रा उतारी थीं। **117 :** या'नी जिन्हें तौरैत दी जैसे कि ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब। **फ़ाएदा :** येह सूरत मक्किय्या है और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के अस्ह़ाब मदीने में ईमान लाए, **अल्लाह** तआ़ला ने इस से पहले उन की ख़बर दी, येह ग़ैबी ख़बरों में से है। (جمل) **118 :** या'नी अहले मक्का में से **119 :** जो कुफ़्र में निहायत सख़्त हैं। ''जुहूद'' उस इन्कार को कहते हैं जो मा'रिफ़त के बा'द हो या'नी जानबूझ कर मुकरना। और वाक़िआ़ भी येही था कि यहूद ख़ूब पहचानते थे कि रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला के सच्चे नबी हैं और कुरआन ह़क़ है, येह सब कुछ जानते हुए उन्हों ने इनादन इन्कार किया। **120 :** कुरआन के नाज़िल होने **121 :** या'नी आप लिखते पढ़ते होते **122 :** या'नी अहले किताब कहते कि हमारी किताबों में नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां की सिफ़त येह मज़्कूर है कि वोह उम्मी होंगे। न लिखेंगे, न पढ़ेंगे। मगर उन्हें इस शक का मौक़अ़ ही न मिला। **123 :** ज़मीर هُوَ का मरजअ़ कुरआन है, इस सूरत में मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम रोशन आयतें हैं जो उ़लमा और हुफ़्फ़ाज़ के सीनों में मह़फ़ूज़ हैं। रोशन आयत होने के येह मा'ना कि वोह ज़ाहिरुल ए'जाज़ हैं और येह दोनों बातें कुरआने पाक के साथ ख़ास हैं और कोई ऐसी किताब नहीं जो मो'जिज़ा हो और न ऐसी कि हर ज़माने में सीनों में मह़फ़ूज़ रही हो। और ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا ने هُوَ की ज़मीर का मरजअ़ सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّم को क़रार दे कर आयत के येह मा'ना बयान फ़रमाए कि सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم साहिब हैं उन आयाते बय्यिनात के जो उन लोगों के सीनों में मह़फ़ूज़ हैं जिन्हें अहले किताब में से इल्म दिया गया क्यूं कि वोह अपनी किताबों में आप की ना'त व सिफ़त पाते हैं। (خازن) **124 :** या'नी यहूदे अ़नूद कि बा'द ज़ुहूरे मो'जिज़ात के जान पहचान कर इनादन मुन्किर होते हैं। **125 :** कुफ़्फ़ारे मक्का **126 :** मिस्ल नाक़ए ह़ज़रते सालेह़ व अ़साए ह़ज़रते मूसा और माइदए ह़ज़रते ईसा के عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام **127 :** ह़स्बे ह़िक्मत जो चाहता है नाज़िल फ़रमाता है **128 :** ना फ़रमानी करने वालों को अ़ज़ाब का और इसी का मुकल्लफ़ हूं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला कुफ़्फ़ारे मक्का के इस क़ौल का जवाब इर्शाद फ़रमाता है : **129 :** मा'ना येह हैं कि कुरआने करीम मो'जिज़ा है अम्बियाए मुतक़द्दिमीन के मो'जिज़ात से अतम्मो अक्मल और तमाम निशानियों से त़ालिबे ह़क़ को बे नियाज़ करने वाला क्यूं कि जब तक ज़माना है कुरआने करीम बाक़ी

www.dawateislami.net

ع ٥ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾ قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَ بَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا

ईमान वालों के लिये तुम फ़रमाओ अल्लाह बस (काफ़ी) है मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह[130] जानता है जो

فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ

कुछ आस्मानों और ज़मीन में है और वोह जो बातिल पर यक़ीन लाए और अल्लाह के मुन्किर हुए

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٥٢﴾ وَ يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ لَوْ لَاۤ اَجَلٌ

वोही घाटे में हैं और तुम से अ़ज़ाब की जल्दी करते हैं[131] और अगर एक ठहराई

مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَ لَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٣﴾

मुद्दत न होती[132] तो ज़रूर उन पर अ़ज़ाब आ जाता[133] और ज़रूर उन पर अचानक आएगा जब वोह बे ख़बर होंगे

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَ اِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٥٤﴾ ۙ يَوْمَ

तुम से अ़ज़ाब की जल्दी मचाते हैं और बेशक जहन्नम घेरे हुए है काफ़िरों को[134] जिस दिन

يَغْشٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَ يَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا

उन्हें ढांपेगा अ़ज़ाब उन के ऊपर और उन के पाउं के नीचे से और फ़रमाएगा चखो

كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٥٥﴾ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَاِيَّايَ

अपने किये का मज़ा[135] ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए बेशक मेरी ज़मीन वसीअ़ है तो

فَاعْبُدُوْنِ ﴿٥٦﴾ كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ ﴿٥٧﴾ وَ

मेरी ही बन्दगी करो[136] हर जान को मौत का मज़ा चखना है[137] फिर हमारी ही त़रफ़ फिरोगे[138] और

الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ

बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये ज़रूर हम उन्हें जन्नत के बालाख़ानों पर जगह देंगे जिन के

व साबित रहेगा और दूसरे मो'जिज़ात की त़रह ख़त्म न होगा। **130 :** मेरे सिद्क़े रिसालत और तुम्हारी तक्ज़ीब का मो'जिज़ात से मेरी ताईद फ़रमा कर। **131 :** येह आयत नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जिस ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से कहा था कि हमारे ऊपर आस्मान से पथ्थरों की बारिश कराइये। **132 :** जो अल्लाह तआ़ला ने मुअ़य्यन की है और उस मुद्दत तक अ़ज़ाब का मुअख़्ख़र फ़रमाना मुक़्तज़ाए हिक्मत है **133 :** और ताख़ीर न होती **134 :** इस से उन में का कोई भी न बचेगा। **135 :** या'नी अपने आ'माल की जज़ा। **136 :** जिस ज़मीन में ब सहूलत इ़बादत कर सको। मा'ना येह हैं कि जब मोमिन को किसी सर ज़मीन में अपने दीन पर क़ाइम रहना और इ़बादत करना दुश्वार हो तो चाहिये कि वोह ऐसी सर ज़मीन की त़रफ़ हिजरत करे जहां आसानी से इ़बादत कर सके और दीन की पाबन्दी में दुश्वारियां दरपेश न हों। **शाने नुज़ूल :** येह आयत ज़ुअ़फ़ाए मुस्लिमीने मक्का के हक़ में नाज़िल हुई जिन्हें वहां रह कर इस्लाम के इज़्हार में ख़त़रे और तक्लीफ़ें थीं और निहायत ज़ीक़ (तंगी) में थे, उन्हें हुक्म दिया गया कि मेरी बन्दगी तो ज़रूर है, यहां रह कर न कर सको तो मदीना शरीफ़ को हिजरत कर जाओ वोह वसीअ़ है वहां अम्न है। **137 :** और इस दारे फ़ानी को छोड़ना ही है। **138 :** सवाब व अ़ज़ाब और जज़ाए आ'माल के लिये, तो लाज़िम

www.dawateislami.net

مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَاؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِیْنَ ﴿۵۸﴾ الَّذِیْنَ

नीचे नहरें बहती होंगी हमेशा उन में रहेंगे क्या ही अच्छा अज्र काम वालों का[139] वोह जिन्हों ने

صَبَرُوْا وَ عَلٰى رَبِّهِمْ یَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۵۹﴾ وَ كَاَیِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا

सब्र किया[140] और अपने रब ही पर भरोसा रखते हैं[141] और ज़मीन पर कितने ही चलने वाले हैं कि अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते[142]

اَللّٰهُ یَرْزُقُهَا وَ اِیَّاكُمْ ۖؗ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ﴿۶۰﴾ وَ لَىٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ

अल्लाह रोज़ी देता है उन्हें और तुम्हें[143] और वोही सुनता जानता है[144] और अगर तुम उन से पूछो[145] किस ने

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ سَخَّرَ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ

बनाए आस्मान और ज़मीन और काम में लगाए सूरज और चांद तो ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने

فَاَنّٰى یُؤْفَكُوْنَ ﴿۶۱﴾ اَللّٰهُ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَ یَقْدِرُ

तो कहां औंधे जाते हैं[146] **अल्लाह** कुशादा करता है रिज़्क़ अपने बन्दों में जिस के लिये चाहे और तंगी फ़रमाता है जिस

لَهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۶۲﴾ وَ لَىٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ

के लिये चाहे बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता है और जो तुम उन से पूछो किस ने उतारा आस्मान से

مَآءً فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا لَیَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ؕ قُلِ الْحَمْدُ

पानी तो इस के सबब ज़मीन ज़िन्दा कर दी मरे पीछे ज़रूर कहेंगे **अल्लाह** ने[147] तुम फ़रमाओ सब ख़ूबियां

لِلّٰهِ ؕ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ﴿۶۳﴾ع وَ مَا هٰذِهِ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَاۤ اِلَّا لَهْوٌ وَّ ع۲

अल्लाह को बल्कि उन में अक्सर बे अक़्ल हैं[148] और येह दुन्या की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल

है कि हमारे दीन पर क़ाइम रहो और अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये हिजरत करो। **139 :** जो **अल्लाह** तआला की इताअत बजा लाए। **140 :** सख़्तियों पर और किसी शिद्दत में अपने दीन को न छोड़ा, मुश्रिकीन की ईज़ा सही, हिजरत इख़्तियार कर के दीन की ख़ातिर वतन को छोड़ना गवारा किया। **141 :** तमाम उमूर में। **142 शाने नुज़ूल :** मक्कए मुकर्रमा में मोमिनीन को मुश्रिकीन शबो रोज़ त़रह त़रह की ईज़ाएं देते रहते थे। सय्यिदे आलम ﷺ ने उन से मदीनए त़य्यिबा की त़रफ़ हिजरत करने को फ़रमाया तो उन में से बा'ज़ ने कहा कि हम मदीना शरीफ़ को कैसे चले जाएं न वहां हमारा घर न माल, कौन हमें खिलाएगा कौन पिलाएगा ? इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और फ़रमाया गया कि बहुत से जानदार ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी साथ नहीं रखते इस की उन्हें क़ुव्वत नहीं और न वोह अगले दिन के लिये कोई ज़ख़ीरा जम्अ करते हैं जैसे कि बहाइम (चौपाए) हैं त़ुयूर (परिन्दे) हैं। **143 :** तो जहां होगे वोही रोज़ी देगा तो येह क्या पूछना कि हमें कौन खिलाएगा कौन पिलाएगा, सारी ख़ल्क़ का **अल्लाह** रज़्ज़ाक़ है, ज़ईफ़ और क़वी, मुक़ीम और मुसाफ़िर सब को वोही रोज़ी देता है। **144 :** तुम्हारे अक़्वाल और तुम्हारे दिल की बातों को। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आलम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर तुम **अल्लाह** तआला पर तवक्कुल करो जैसा चाहिये तो वोह तुम्हें ऐसी रोज़ी दे जैसी परिन्दों को देता है कि सुब्ह़ भूके ख़ाली पेट उठते हैं शाम को सेर (पेट भरे) वापस होते हैं। (ترمذی) **145 :** या'नी कुफ़्फ़ारे मक्का से **146 :** और बा वुजूद इस इक़रार के किस त़रह **अल्लाह** तआला की तौह़ीद से मुन्ह़रिफ़ होते हैं। **147 :** इस के मुक़िर हैं। **148 :** कि बा वुजूद इस इक़रार के तौह़ीद के मुन्किर हैं।

وقف لازم

لَعِبٌ ؕ وَ اِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۴﴾ فَاِذَا

कूद[149] और बेशक आख़िरत का घर ज़रूर वोही सच्ची ज़िन्दगी है[150] क्या अच्छा था अगर जानते[151] फिर जब

رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ۬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى

कश्ती में सुवार होते हैं[152] अल्लाह को पुकारते हैं एक उसी पर अ़क़ीदा ला कर[153] फिर जब वोह उन्हें ख़ुश्की की त़रफ़

الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ﴿۶۵﴾ لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ ۚۛ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ٚ وقفة فَسَوْفَ

बचा लाता है[154] जभी शिर्क करने लगते हैं[155] कि नाशुक्री करें हमारी दी हुई ने'मत की[156] और बरतें[157] तो अब

يَعْلَمُوْنَ ﴿۶۶﴾ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّ يُتَخَطَّفُ النَّاسُ مِنْ

जाना चाहते हैं[158] और क्या उन्हों ने[159] येह न देखा कि हम ने[160] ह़ुरमत वाली ज़मीन पनाह बनाई[161] और उन के आस पास वाले लोग उचक लिये

حَوْلِهِمْ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَ بِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ﴿۶۷﴾ وَمَنْ اَظْلَمُ

जाते हैं[162] तो क्या बातिल पर यक़ीन लाते हैं[163] और अल्लाह की दी हुई ने'मत से[164] नाशुक्री करते हैं और उस से बढ़ कर ज़ालिम कौन

مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ اَلَيْسَ فِيْ

जो अल्लाह पर झूट बांधे[165] या ह़क़ को झुटलाए[166] जब वोह उस के पास आए क्या जहन्नम में

جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ

काफ़िरों का ठिकाना नहीं[167] और जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की ज़रूर हम उन्हें अपने रास्ते

سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۶۹﴾ ع

ع ٧ ٢ ٣

दिखा देंगे[168] और बेशक अल्लाह नेकों के साथ है[169]

149 : कि जैसे बच्चे घड़ी भर खेलते हैं खेल में दिल लगाते हैं फिर उस सब को छोड़ कर चल देते हैं, येही ह़ाल दुन्या का है, निहायत सरीउ़ज़्ज़वाल (जल्दी मिटने वाली) है और मौत यहां से ऐसे ही जुदा कर देती है जैसे खेल वाले बच्चे मुन्तशिर हो जाते हैं। 150 : कि वोह ज़िन्दगी पाएदार है दाइमी है उस में मौत नहीं, ज़िन्दगानी कहलाने के लाइक़ वोही है। 151 : दुन्या और आख़िरत की ह़क़ीक़त तो दुन्याए फ़ानी को आख़िरत की जाविदानी ज़िन्दगी पर तरजीह़ न देते। 152 : और डूबने का अन्देशा होता है तो बा वुजूद अपने शिर्को इनाद के बुतों को नहीं पुकारते बल्कि 153 : कि इस मुसीबत से नजात वोही देगा। 154 : और डूबने का अन्देशा और परेशानी जाती रहती है इत़्मीनान ह़ासिल होता है 155 : ज़मानए जाहिलिय्यत के लोग बह़री सफ़र करते वक़्त बुतों को साथ ले जाते थे, जब हवा मुख़ालिफ़ चलती और कश्ती ख़त़रे में आती तो बुतों को दरिया में फेंक देते और या रब या रब पुकारने लगते और अम्न पाने के बा'द फिर उसी शिर्क की त़रफ़ लौट जाते 156 : या'नी उस मुसीबत से नजात की। 157 : और इस से फ़ाएदा उठाएं ब ख़िलाफ़ मोमिनीने मुख़्लिसीन के कि वोह अल्लाह तआ़ला की ने'मतों के इख़्लास के साथ शुक्र गुज़ार रहते हैं और जब ऐसी सूरत पेश आती है और अल्लाह तआ़ला उस से रिहाई देता है तो उस की त़ाअ़त में और ज़ियादा सरगर्म हो जाते हैं, मगर काफ़िरों का ह़ाल इस के बिल्कुल बर ख़िलाफ़ है। 158 : नतीजा अपने किरदार का। 159 : या'नी अहले मक्का ने 160 : उन के शहर मक्कए मुकर्रमा की 161 : उन के लिये जो इस में हों 162 : क़त्ल किये जाते हैं, गिरिफ़्तार किये जाते हैं। 163 : या'नी बुतों पर 164 : या'नी सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم से और इस्लाम से कुफ़्र कर के 165 : उस के लिये शरीक ठहराए 166 : सय्यिदे आ़लम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की नुबुव्वत और कुरआन को न माने। 167 : बेशक तमाम काफ़िरों

www.dawateislami.net

ايَاتها ٦٠ | ٣٠ سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ ٨٤ | رکوعاتها ٦

सूरए रूम मक्किय्या है, इस में साठ आयतें और छ[6] रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रह़्म वाला[1]

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ﴿۲﴾ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ

रूमी[2] मग़्लूब हुए पास की ज़मीन में[3] और अपनी मग़्लूबी के बा'द

سَيَغْلِبُوْنَ ﴿۳﴾ فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ؕ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَ

अ़न्क़रीब ग़ालिब होंगे[4] चन्द बरस में[5] हुक्म अल्लाह ही का है आगे और पीछे[6] और

يَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿۴﴾ بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ

उस दिन ईमान वाले ख़ुश होंगे अल्लाह की मदद से[7] वोह मदद करता है जिस की चाहे और वोही है

का ठिकाना जहन्नम ही है **168 :** हज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने फ़रमाया कि मा'ना येह हैं कि जिन्हों ने हमारी राह में कोशिश की हम उन्हें सवाब की राह देंगे। हज़रते जुनैद ने फ़रमाया : जो तौबा में कोशिश करेंगे उन्हें इख़्लास की राह देंगे। हज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ ने फ़रमाया : जो त़लबे इल्म में कोशिश करेंगे उन्हें अ़मल की राह देंगे। हज़रते सा'द बिन अ़ब्दुल्लाह ने फ़रमाया : जो इक़ामते सुन्नत में कोशिश करेंगे, हम उन्हें जन्नत की राह दिखा देंगे। **169 :** उन की मदद और नुसरत फ़रमाता है। **1 :** सूरए रूम मक्किय्या है, इस में छ[6] रुकूअ़, साठ आयतें, आठ सो उन्नीस कलिमे, तीन हज़ार पांच सो चोंतीस ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** फ़ारस और रूम के दरमियान जंग थी और चूंकि अहले फ़ारस मजूसी थे इस लिये मुश्रिकीने अ़रब उन का ग़लबा पसन्द करते थे, रूमी अहले किताब थे इस लिये मुसल्मानों को इन का ग़लबा अच्छा मा'लूम होता था। ख़ुस्रव परवेज़ बादशाहे फ़ारस ने रूमियों पर लश्कर भेजा और क़ैसरे रूम ने भी लश्कर भेजा, येह लश्कर सर ज़मीने शाम के क़रीब मुक़ाबिल हुए, अहले फ़ारस ग़ालिब हुए, मुसल्मानों को येह ख़बर गिरां गुज़री, कुफ़्फ़ारे मक्का इस से ख़ुश हो कर मुसल्मानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और नसारा भी अहले किताब और हम भी उम्मी और अहले फ़ारस भी उम्मी हमारे भाई अहले फ़ारस तुम्हारे भाइयों रूमियों पर ग़ालिब हुए हमारी तुम्हारी जंग हुई तो हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस पर येह आयतें नाज़िल हुईं और इन में ख़बर दी गई कि चन्द साल में फिर रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आ जाएंगे। येह आयतें सुन कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ारे मक्का में जा कर ए'लान कर दिया कि ख़ुदा की क़सम रूमी ज़रूर अहले फ़ारस पर ग़लबा पाएंगे, ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से ख़ुश मत हो, हमें हमारे नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने ख़बर दी है। उबय्य बिन ख़लफ़ काफ़िर आप के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त़ हो गई अगर नव साल में अहले फ़ारस ग़ालिब आ जाएं तो हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उबय्य को सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को सो ऊंट देगा, उस वक़्त तक क़िमार की हुरमत नाज़िल न हुई थी। **मस्अला :** और हज़रते इमाम अबू ह़नीफ़ा व इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمَا के नज़्दीक ह़र्बी कुफ़्फ़ार के साथ उक़ूदे फ़ासिदा रिबा वग़ैरा जाइज़ हैं और येही वाक़िआ़ इन की दलील है। अल क़िस्सा सात साल के बा'द इस ख़बर का सिद्क़ ज़ाहिर हुवा और जंगे हुदैबिया या बद्र के दिन रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब आए और रूमियों ने मदाइन में अपने घोड़े बांधे और इराक़ में रूमिया नामी एक शहर की बिना रखी और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने शर्त़ के ऊंट उबय्य की औलाद से वुसूल कर लिये क्यूं कि वोह इस दरमियान में मर चुका था। सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने हज़रते सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को हुक्म दिया कि शर्त़ के माल को सदक़ा कर दें। येह ग़ैबी ख़बर हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की सिह़्ह़ते नुबुव्वत और क़ुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। (خازن ومدارک) **3 :** या'नी शाम की उस सर ज़मीन में जो फ़ारस के क़रीब तर है। **4 :** अहले फ़ारस पर **5 :** जिन की ह़द नव बरस है। **6 :** या'नी रूमियों के ग़लबे से पहले भी और उस के बा'द भी। मुराद येह है कि पहले अहले फ़ारस का ग़ालिब होना और दोबारा अहले रूम का येह सब अल्लाह के अम्र व इरादे और उस के क़ज़ा व क़दर से है। **7 :** कि उस ने किताबियों को ग़ैर किताबियों पर ग़लबा दिया और उसी रोज़ बद्र में मुसल्मानों को मुश्रिकों पर और मुसल्मानों का सिद्क़ और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और क़ुरआने करीम की ख़बर की तस्दीक़ ज़ाहिर फ़रमाई।